श्री हनुमत् हृदय

ॐ श्री राम

ॐ श्री राम जय राम जय जय राम ॐ

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी बुद्धवार विक्रमी सम्वत् २०४७ को भगवान् मारुति के पावन जन्म महोत्सव के शुभ अवसर पर जब आचार्य श्री हृदय की गहरी पीड़ा में आराध्य देव भगवान् मारुति के चरणों में ध्यानस्थ थे तो उनके अन्तर्तम की पुकार द्वारा यह विनय श्री हनुमत् हृदय के रूप में लिख कर भगवान् आन्जनेय के श्री चरणार्विन्द में सादर समर्पित की । उन्हीं की कृपा प्रसाद प्राप्त कर उन्होंने अपनी हृदय पीड़ा का निवारण किया । यह उनचास पद श्री हनुमत् हृदय के नाम से प्रसिद्ध हैं । हृदय के रोग से पीड़ित भगवान् मारुति के परम भक्त यदि श्रद्धा, विश्वास एवं भक्ति युक्त होकर नित्य प्रति श्री हनुमत् हृदय का पाठ करेंगे तो निश्चय ही वे परमानन्द की अनुभूति प्राप्त कर सदा के लिय रोग से निवृति प्राप्त करेंगे ।

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ हं हनुमते नमः

ध्यान

भगत हेतु भगवान रामसिय नर तनुधारी ।
हरि सेवा हित आप भयो कपि रूप पुरारी ॥
कनक वरण तनु तेज पुंज जनु उदित दिवाकर ।
सनकादिक मुनिवृंद सहित शोभित सुरतरुतर ॥
सुमिरत सब संकट हरत देत भक्ति मति ज्ञान की ।
ध्यान धरे मंगल करत मूरति मोद निधान की ॥ १ ॥

श्री हनुमत् हृदय

पवनपूत हे रामदूत करुणा के सागर ।
निगम नेति नित कहत नाथ सद्गुण के आगर ॥
तेरो पावन नाम सकल कलिमल को नाशै ।
पद पंकज की धूल अविद्या मूल विनाशै ॥
पापिऊँ पावत परम पद बारेक पाहि पुकारिके ।
देहु अभय वर बावरहिं हे दाता फल चारि के ॥ २ ॥

॥ विनय ॥

श्री हनुमत् हृदय

बारेहीं सो आई परयो शरण तिहारी नाथ ।
लियो अपनाय निज जानि गहि हाथ सो ॥
अबुध अनाथ सो सनाथ कियो पल माहिं ।
लाइ बैठाइ दियो संतन्ह को साथ सो ॥
केसरी कुमार की संभार में सर्वभांति ।
पायो नित ठाँव सांई सीतापति नाथ सो ॥
गरब गरूर सो सरूर गयो बावरो को ।
पीड़त पिशाच रोग जानि के अनाथ सो ॥ १ ॥

श्री हनुमत् हृदय

जहाँ नित करत निवास नाथ नाम रूप ।
वहीं नीच करत प्रहार बार बार है ॥
कहाँ जाँऊ कासो कहौं करुणानिधान बाप ।
तोहि बिनु मोहि कौन दूसरो अधार है ॥
राम की दुहाई राम नाम की दुहाई देव ।
वेगहिं संभारो नहिं जात सहि भार है ॥
तुमरो कहाइ के हँसाइ जग बावरहिं ।
याहि सुनि सोच होत वेदना अपार है ॥ २ ॥

श्री हनुमत् हृदय

एकही छलांग में अगाध सिंधु लांघि गयो ।
मेरो दुख दाह काह तेहि ते अपार है ॥
अक्षय निकंदन दुलारे रघुनन्दन को ।
तेरो एक नाम सब औषधि को सार है ॥
आधि व्याधि जनित गनित अगनित दुख ।
प्रेत औ पिशाच भागैं सुनत हुंकार है ॥
रावरोहि बावरो के माई बाप कपिनाथ ।
तेरो बिनु और कौन दूसरो हमार है ॥ ३ ॥

श्री हनुमत् हृदय

देव हितकारी रुद्र कपि तनु धारी ।
राम कारज संवारि कियो लोकप सुखारी है ॥
सीय शोकहारी अक्ष राक्षस संहार करी ।
लंकपुर जारी दसमुख मद हारी है ॥
रामगुन गायक सहाय सदा संतन्ह को ।
भक्तभय हारी नाथ मोहि क्यों बिसारी है ॥
बावरो को रावरो सहारो प्रतिपल छिन ।
रटि रटि नाम तव उमर गुजारी है ॥ ४ ॥

श्री हनुमत् हृदय

रुद्र अवतार भार महि को हरनहार ।
दीन दुख दारन की टेक नित लई है ॥
करुणा के धाम राम नाम में निरत सदा ।
अधम उद्धारन की बान परि गई है ॥
आरत की कातर पुकार सुनि आतुर ह्वै ।
करत संभाल यश तिहुँ लोक छई है ॥
बावरे की बेर देर काहे को करत नाथ ।
बार बार टेरत अवेर बहु भई है ॥ ५ ॥

श्री हनुमत् हृदय

विरुद तिहारो बालपन सों लुभायो मन ।
तापै अपनाई लियो सरन अनाथ को ॥
प्रभु यश गावत सुनावत भगति भाव ।
अति सुख पावत रिझाइ निज नाथ को ॥
बीचहिं में व्याधि ये असाधि रूप धारि आयो ।
करम पिशाच कोउ छोड़त न साथ को ॥
बावरो को रावरोहि हाथ में करमकाल ।
सांसति सहत तउ कांकर ज्यों पाथ को ॥ ६ ॥

श्री हनुमत् हृदय

दया के निधान हनुमान मान तोहि पर ।
पायो जग मान जन रावरो कहाइ कै ॥
अबुध प्रबुध बुध विबुध सो काम कहाँ ।
अति अभिराम निज नाथ गुनगाई कै ॥
हृदय अगाध जँह आपको निवास नित ।
करै तँह राज रुज नौवत बजाई कै ॥
तोसों समरथ सो सुनाथ नाथ बावरो को ।
कहौ कहाँ राखै तब मूरति सजाई कै ॥ ७ ॥

श्री हनुमत् हृदय

मोहि अति पीड़त पिशाच रोग रैन दिन ।
पल पल बीतत पहाड़हूँ की नाई है ॥
करम कराल है विशाल व्याधि रूप क्रूर ।
ग्रह को प्रभाव किंधौं वेदना बढ़ाई है ॥
अंजनि को लाल सदा मेट्यो है कुअंक भाल ।
अमित मिशाल यश संत जन गाई है ॥
देखु एक बार यह दुर्गति हमारी देव ।
देर क्यों लगाइ राम नाम की दुहाई है ॥ ८ ॥

श्री हनुमत् हृदय

झूठो सांचो राम को हौं कहत सकृत कोऊ ।
ताको दुख मेटन को नाथ व्रतधारी है ॥
राम नाम जापक को ताप त्रयहरी लेत ।
करत संभाल शिशु यथा महतारी है ॥
मेरो रोम रोम में रम्यो है राम नाम नित ।
जानत कृपालु यह करुणा तुम्हारी है ॥
बावरो को रावरो विहाय और ठौर कहाँ ।
बारेहि ते द्वारे रिरियात ह्वै भिखारी है ॥ ९ ॥

श्री हनुमत् हृदय

वैद्य कहैं वायु को प्रकोप भयो तन माहीं ।
ताते यह व्याधि विकराल बनी गई है ॥
सुनि मन गुनत गुमान नाथ कापै करौं ।
सुहृद सुजान जब भौंह तानि लई है ॥
प्राण को अधार प्राणनाथ को परम हितु ।
मरुत महान तिहुँ लोकन्ह में जई है ॥
नाथ तात कोप से बचाय लेहु बावरहिं ।
कहऊ पवमान पूत चूक काह भई है ॥ १० ॥

श्री हनुमत् हृदय

वेद कहै ब्रह्म को प्रत्यक्ष रूप सत्य जाहिं ।
जगत अधार जड़ चेतन की गति है ॥
पवन प्रकोप से उबारि लेई प्राणनि को ।
ऐसो समरथ त्रिभुवन कौन पति है ॥
अति अधिकार तव तात पै तिहारो जानि ।
करत पुकार यह दास जड़मति है ॥
पवन कुमार करि करुणा निहारु नेकु ।
राखि लेहु बावरहिं तेरो पद रति है ॥ ११ ॥

श्री हनुमत् हृदय

जीवे की न चाह नीच मीचु को न भय नेक ।
जानत हो नाथ न बनाइके कहतु हौं ॥
मारग खरोसो राम नाम को भरोसो एक ।
सांचि जिय जानि नित निरत रहतु हौं ॥
मारुति महान सों जहान कौन दूजो देव ।
ताको यश गाई नित आनन्द लहतु हौं ॥
रावरोहि बावरो की गति मति कपिनाथ ।
और कहँ जाई काको पायन गहतु हौं ॥ १२ ॥

श्री हनुमत् हृदय

कीरति तिहारी तिहुँ लोक में पसरि रह्यो ।
पावन प्रताप को पताको फहरतु है ॥
रावन समान कुंभकर्ण घननादहुँ सो ।
हाँक सुनि यातुधान सेना हहरतु है ॥
बावरे की पीर कहाँ ताहुते प्रबल देव ।
रैन दिन नाम लै तिहारो कहरतु है ॥
देर मेरी बेर क्यों करी है करुणानिधान ।
देख उर व्याधि बहु भाँति घहरतु है ॥ १३ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरो ही प्रताप रविमंडल को ताप भयो ।
करुणा तुम्हारी सोम सुधा बरसति है ॥
पावक प्रचण्ड रूप भूप सब देवन को ।
प्रभुता तुम्हारी तिहुँ लोक दरशति है ॥
बुद्धि बल धाम सिय राम को संवारयो काम ।
कीरति ललाम जन मन करषति है ॥
ऐहो रामदूत तेरी महिमा प्रभूत सुनि ।
बावरा विभोर रोम रोम हरषति है ॥ १४ ॥

श्री हनुमत् हृदय

वेद यश गावत बतावत पवन पूत ।
प्रथम प्रसूत सद्गुण को निधान हैं ॥
देवन्ह को देव रुद्र देव को प्रगट तनु ।
तोम तम नाशन को परम कृशानु हैं ॥
अमित अपार तेज ताप तिहुँ लोकन्ह में ।
नाथ ही के हाथ काल करम विधान है ॥
सबल सरल सुमिरत सुखदायक हो ।
बावरो तिहारो यह उर में गुमान है ॥ १५ ॥

श्री हनुमत् हृदय

परम प्रचण्ड भुजदंड बलवारिनिधि ।
पार करि पावे तिहुँ लोक समरथ को ॥
रावण समान जातुधान डूब्यो जाहि बीच ॥
अगम अपार देव महिमा अकथ को ॥
ताहि को सहारो बालपन सो हमारो रह्यो ॥
जाको यश गाइ पूज्यो राय दशरथ को ॥
अंजनि कुमार को कहाइ जग जीवत हौं ॥
सोच कहाँ बावरे को राही राजपथ को ॥ १६ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरो बल बारिधि अपार कौन पावे पार ।
बूढ्यो अहिरावण सहित परिवार को ॥
थाह लेन आयो महासुभट दसानन सों ।
सोऊ बहि गयो धार मुष्टिक प्रहार को ॥
औरन की बात कहाँ देख के सिहात सुर ।
संतन्ह सहाय बाहु अंजनि कुमार को ॥
अमित प्रताप ताप हरे निज दासन्ह को ।
बावरो तिहारो नाथ दूसरो अधार को ॥ १७ ॥

श्री हनुमत् हृदय

जग सिंधु माहिं बिन्दू तन है क्षणिक नाथ ।
ताहि नित राखन की चाह किमि करिहौं ॥
प्रभु को विहाय प्रीति अनत लगाय देव ।
दियो गुरु सीख भव कूप माहिं परिहौं ॥
सुर दुर्लभ तव करुणा प्रसाद जानि ।
राखत संभारि देह याहि चित्त धरिहौं ॥
व्याधि है असाधि कियो बावरा विकल अति ।
मानि अपराध कोऊ दंड यह भरिहौं ॥ १८ ॥

श्री हनुमत् हृदय

करुणानिधान हनुमान मान तोहि पर ।
दूसरे दुआरे दुख जाइ कहाँ कहिहैं ॥
तोसो समरथ को कहाइ जन जग माहिं ।
आधि व्याधि जनित त्रिताप उर सहिहैं ॥
हिय तव आस नाथ आँखिन्ह में आँसू लिए ।
तन मन वचन चरन नित गहिहैं ॥
राम नाम रति गति रावरोहि बावरो को ।
जाहि विधि राखो अब ताहि विधि रहिहैं ॥ १९ ॥

श्री हनुमत् हृदय

देखि दुखी दास को द्रवित नहीं होत हिय ।
दीनबंधु तेरो अभिधान किमि रहिहैं ॥
करुणा कृपान से न काटिहैं करम जाल ।
लाल अंजनि का तिहुँ लोक कहा कहिहैं ॥
संत हितकारी दशा देखि तव भक्तन्ह को ।
झूठ सांच नाथ यह बानो कौन गहिहैं ॥
बावरे को सोच अति कहत संकोच होत ।
देर किए नाम महिमा की नाव बहिहैं ॥ २० ॥

श्री हनुमत् हृदय

प्रकृति प्रवाह में परयो है जीव जग माहिं ।
जानत न सांच झूठ मतिभ्रम भई है ॥
विधि को विधान जामे करम प्रधान बनयो ।
ताते जड़ चेतन की गांठ परि गई है ॥
केसरी कुमार करी करुणा अपार मो पे ।
काटि भ्रमजाल राम नाम रति दई है ॥
रावरो भरोसो सदा बावरो विहार कियो ।
काको कहै नाथ यह व्याधि उर भई है ॥ २१ ॥

श्री हनुमत् हृदय

पवमानपूत दूत राम रघुनायक को ।
देव बंदीछोर त्रिभुवन यश गावतो ॥
दनुज गहन बन दहन कृशानु रूप ।
भक्तभय हारी सिय राम मन भावतो ॥
प्रबल पराक्रम सुनत सकुचत सुर ।
दीन को पुकार सुनि आतुर ह्वै धावतो ॥
बावरे की बेर देर करी क्यों कृपानिधान ।
काह श्रम होत हिय रोग को नसावतो ॥ २२ ॥

श्री हनुमत् हृदय

सीय सुखदायक विधायक करम काल ।
पायक प्रसिद्ध महाराज रघुराज को ॥
दीन दुख दारक विदारक दनुज वृंद ।
भवभय हारक विरुद कपिराज को ॥
संकट हरण की शरण गए पातकी हूँ ।
परम पुनीत होत संत सिरताज को ॥
बावरे की व्याधि कहाँ इतनी असाधि भई ।
मेटि नहीं पावत करैया सुरकाज को ॥ २३ ॥

श्री हनुमत् हृदय

हाँक सुनि हहरि पिशाच प्रेत भागि जात ।
दानव दलन रणधीर महावीर को ॥
देव मुनि मानव कृपा की हिय चाह लिए ।
विरुद बखाने सदा सुवन समीर को ॥
औरनि को बात कहाँ शारदा सहस मुख ।
यश नित गावत दुलारे रघुवीर को ॥
बावरे बराक की कहाँ है गति मति नाथ ।
आइके सुनाई सके निज उर पीरको ॥ २४ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरो बल विपुल सराहत सकल सुर ।
सुनि मन मोद होत जानकी रमन को ॥
कीरति तुम्हारी तिहुँ लोकन्ह में व्यापि रह्यो ।
वेद जस गावैं सदा संकट शमन को ॥
ईश अवतार हिय करुणा अपार लिए ।
धावत प्रणत दुख दारिद दमन को ॥
पूजा को न साज कपिराज आज बावरे की ।
करो स्वीकार कोटि कोटिन्ह नमन को ॥ २५ ॥

श्री हनुमत् हृदय

राम नाम रति मति विरति प्रपंचहूते ।
ऐसे निर्द्वन्द्व संत बाप मन भावहीं ॥
पावन परम यश रावण निकंदन को ।
गाई गन्धर्व नित नाथ को सुनावहीं ॥
बुद्धि बल दाता वेद विद्या के विधाता देव ।
भक्त भय त्राता कवि कीरति वर गावहीं ॥
बावरा विकल अति जानत सुजान जान ।
टूटो हिय लाइ कहाँ आपको दिखावहीं ॥ २६ ॥

श्री हनुमत् हृदय

मूरति विशाल विकराल अति कालहूँते ।
मानो नभपूरि रह्यो कपि तनुधारी से ॥
सहमि छिपाने भानु भभरि भगाने सुर ।
देखत प्रचंड तेज कोटिन्ह तमारी से ॥
पवन गमन तजि आनन्द मगन मन ।
सुनि सुत संस्तुति सुरेश त्रिपुरारी से ॥
बावरा विलोकि के तिलोक के तिलक नाथ ।
धन्य धन्य धन्य भयो देव हितकारी से ॥ २७ ॥

श्री हनुमत् हृदय

दायें हाथ गदा गहि मानो नभ नापि रह्यो ।
बायें महाभूधर उपारि कपि धर्‌यो हैं ॥
सन्मुख समर माहि असुर समूह देखी ।
गरजि तरजि तापै गाज जिमि पर्‌यो हैं ॥
सुनत हुँकार हाहाकार करि खल दल ।
यातुधान सुभट हहरि हिय मर्‌यो हैं ॥
बावरो विलोकि कपि कौतुक चकित चित ।
बरसि प्रसून जय जय सुर कर्‌यो हैं ॥ २८ ॥

श्री हनुमत् हृदय

भूत वेताल यक्ष राक्षस पिशाच प्रेत ।
दूरि भजि जात सुनि हाँक हनुमान को ॥
अति अभिमानी भट सुभट महाभट सो ।
पीठ दै परात लखि समर सुजान को ॥
बार बार देवन्ह सराह्यो नाथ बाहुबल ।
तौलि सके ताको वीर दूसरो महान को ॥
ऐहो महावीर हिय पीर हरो बावरे की ।
तोसों तिहुँ लोक माहिं करुणानिधान को ॥ २९ ॥

श्री हनुमत् हृदय

प्रबल प्रचंड रूप धारि रणभूमि माहिं ।
राक्षस संहारी राम काज सब साज्यो है ॥
संत हितकारी काम कोटि छवि तनु धारि ।
मुनि मन हारी भक्त हिय में विराज्यो है ॥
परम प्रताप तेज भानु से अमित अति ।
शीतल सुखद शोभा शशि मुख भ्राज्यो है ॥
मारुति की झाँकी देखि बावरा निहाल होत ।
सुयश तिहारो नाथ दहुँ दिसि गाज्यो है ॥ ३० ॥

श्री हनुमत् हृदय

बाल केलि खेल में आकाश लांघि आंजनेय ।
लीलि लियो भानु लाल फल अनुमानि के ॥
हाहाकार भयो तिहुँ लोक तम तोम छायो ।
धाई सुरराज मार्‌यो वज्र उर तानिके ॥
पवन प्रकोपि मघवा को मद चूर कियो ।
पूज्यो सुरवृंद निज पति पहचानि के ॥
छोड्यो दिनमान मिट्यो संकट महान जग ।
बावरा मगन प्रभु कौतुक बखानि के ॥ ३१ ॥

श्री हनुमत् हृदय

अंजनि कुमार तेरो कौतुक अनेक नाथ ।
कहाँ लौ बखानौ मम मति अति भोरी है ॥
सुकवि सराहैं शेष शारदा सकुचि रहें ।
आन कहँ आके विधि बुद्धि गति थोरी है ॥
लीलहिं में लांघि सिंधु लंक विध्वंस कियो ।
त्रिभुवन जयी दशग्रीव मदतोरी है ॥
विपिन विहारी देव विपति निवारी सदा ।
ताहु ते प्रबल उर पीर कहाँ मोरी है ॥ ३२ ॥

श्री हनुमत् हृदय

देव दुखहारी रुद्र लीला अवतारी नाथ ।
कपि तनु धारी किए कौतुक अनेक है ।
परम विरागी अनुरागी सियराम पद ।
सन्त हित लागी दुष्ट दलन की टेक है ॥
दीन हतभागी पाहि शरण तिहारी कह्यो ।
विपति विदारन को बाप तुम एक है ॥
बावरा विचारो बालपन से तिहारो दास ।
तासु पीर मेटन में देर यों कितेक है ॥ ३३ ॥

श्री हनुमत् हृदय

देर नहीं लायो देव सिय सुधि लाइबे में ।
बारिनिधि लांघि हते दनुज महान हैं ॥
देर नहीं लायो धाई लखन बचाई लियो ।
भूधर उपारि लाए औषधि सुजान हैं ॥
देर नहीं लायो नाथ पैठि के पताल माहिं ।
मारि अहि सकुल उबारयो प्रभु प्राण हैं ॥
बावरे की बेर देर भई कहाँ कपिनाथ ।
दास दुख दरिबे को वीर हनुमान हैं ॥ ३४ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरो बल विक्रम बखानै नित सीतापति ।
तिहुँ लोक तेरी कल कीरति अभंग है ॥
तेरो तेज पुंज हरि लेत तेज देवन्ह को ।
तारागण माहिं मानो उदित पतंग है ॥
राम की शरण राम नाम गुण गायक को ।
राखत संभाल सदा रहि अंग संग है ॥
टूटो हिय भाव भरि विनय सुनावौं किमि ।
बावरा शिथिल अंग नाथ बजरंग है ॥ ३५ ॥

श्री हनुमत् हृदय

ब्रह्मकुल भूषण हो पूषण परावर को ।
भक्त हिय दूषण को हरि लेत छन में ॥
देव मुनि त्राता हो विधाता निज दासन्ह को ।
करत विहार सदा राम गुणगन में ॥
अंजनि को लाल महाकाल दसभाल कुल ।
दया के निधान नाथ राजैं जन मन में ॥
करमनि को भोग क्रूर ग्रह को संयोग कहा ।
बावरा बेहाल देखु व्याधि भई तन में ॥ ३६ ॥

श्री हनुमत् हृदय

बार बार कहे नाथ निपट ढिठाई होत ।
निदरि दुआरे परयो मौन गहि रहिहौं ॥
जानत सुजान जन मन की अगति गति ।
स्वामी सर्वज्ञ सो बनाई कहा कहिहौं ॥
सुख की न चाह मोहि दुख की न परवाह ।
तुमरो प्रसाद मानि हानि लाभ लहिहौं ॥
मेरी गति देखि तेरो नाम पै हँसेंगे लोग ।
दयासिंधु ऐसो उपहास किमि सहिहौं ॥ ३७ ॥

श्री हनुमत् हृदय

सीतापति स्वामी परमेश को प्रकट रूप ।
भक्त हित हेतु नाथ नर तनुधारी हैं ॥
सदगुरु भानु वेद विद्या के निधान देव ।
तेजपुंज धाम प्रभु पावन तमारी है ॥
पितु पवमान प्राणदाता जग जीवन को ।
प्राकृत महान मातु अंजना तुम्हारी है ॥
आप चन्द्रभाल हरि काज बनयो कपिराज ।
देखु दुखी द्वारे परयो बावरा अनारी है ॥ ३८ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरो जन जानि के निहारि करुणा की कोर ।
देत निज धाम में निवास राम जानकी ॥
तेरो हित मानि महाँ कालहुँ कृपालु होत ।
रहत प्रसन्न शिवाशक्ति भगवान की ॥
तेरो पद किंकर समुझि मार्तण्ड देव ।
रोग तम हरत संभाल करे प्राण की ॥
बावरे की भुक्ति मुक्ति नाथ ही के हाथ सब ।
दूजो और ठौर कहाँ बाप है अजान की ॥ ३९ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरो नाम लेत पाप ताप सब दूरि होत ।
भूरि भाग्य भाजन बनत जीव जग में ॥
तेरो गुणगान सुनि मुदित ईशान सदा ।
करत सहाय नित देव पग पग में ॥
तोहि सुमिरत काज अगम सुगम होत ।
घोर भव बारिनिधि लांघे एक डग में ॥
बावरे की ओर करि कोर करुणा कि नाथ ।
देहु वर राम नाम गूंजै रग रग में ॥ ४० ॥

श्री हनुमत् हृदय

पाहि कहि बारेक पुकारत शरण आई ।
देव शूलपाणि हरि लेत सब शूल हैं ॥
करुणा की ओट तेरी देखि जन जानि हित ।
ग्रह ग्रहपति सदा होत अनुकूल हैं ॥
तेरो पद पंकज की रति गति दीनन को ।
छाँह तेरी बांह की सकल सुख मूल है ॥
दास की दशा निहारि नाथ समुझाई देऊ ।
दीनबंधु बावरे से कहां भई भूल है ॥ ४१ ॥

श्री हनुमत् हृदय

हौं तो अल्पज्ञ साथ सम्बल न साधन को ।
कौन भांति प्राकृत प्रवाह से उबरि हैं ॥
जो पै निज दासन्ह को अवगुण गनैगो नाथ ।
तेरी प्रभुताई पे भरोसो कौन करि हैं ॥
स्वामी सर्वज्ञ से बनाई के कहैंगो कछु ।
जानत हौं नाथ यह जीह गरि परि हैं ॥
बारेही ते बावरे को रावरी शरण एक ।
निदरे अनाथ नाथ काज कहाँ सरि हैं ॥ ४२ ॥

श्री हनुमत् हृदय

कौन ऐसी योनि जग जामें न जनम भयो ।
कौन अपकर्म ऐसो जाको नहीं कीन्हो है ॥
करुणानिधान की दया से नरदेह पाई ।
बारेहि ते नाथ अपनाई मोहि लीन्हो है ॥
करम उपासना की साधना न सिद्धि कोऊ ।
प्रभु की प्रभा में सब झूठ सांच चीन्हो है ॥
कृपा के सहारे भव सिंधु के किनारे लाई ।
बावरे बराक को बिसारि किमि दीन्हो है ॥ ४३ ॥

श्री हनुमत् हृदय

जेती जग यातना सही है बहु बार ताहिं ।
नाथ मन भावै तो अनन्त बार सहिहौं ।
जनम अनेक काल करम त्रिविध ताप ।
देखि सुख मानै बाप आह नहीं कहिहौं ।
तेरी छाँह छाड़िके न चाह सुर लोकहूँ को ।
प्रभु के निहारे नरकहूँ सुख लहिहौं ॥
रावरी सुछवि सदा बावरे के हिय बसी ।
जानत सुजान जान और काह चहिहौं ॥ ४४ ॥

श्री हनुमत् हृदय

जानत सुजान देव अबुध अजान गति ।
अहि गहि ताहि संग खेलन चहत हौं ॥
परयो बहु बार विषय जाल काल कूप माहिं ।
धाई बार बार नाथ ताहि को गहत हौं ॥
सुगति अगति हित अहित को भान नहीं ।
ताते नित कामना की आगि में दहत हौं ॥
बावरे की हानि लाभ रावरेहि हाथ सब ।
समझ सयानप न हिय की कहत हौं ॥ ४५ ॥

श्री हनुमत् हृदय

पवन प्रसाद से अनल हरि हित लागि ।
काम रूप राजे मातु अंजना की गोद में ॥
तेज रुद्र देव को सगुण तनु धारि जनु ।
पुंजीभूत राम नाम प्रगट्यो प्रमोद में ॥
परम प्रताप को प्रकाशित करन हेतु ।
गहि लियो मार्तण्ड बालक विनोद में ॥
प्रभु को प्रभाव गुण महिमा समुझि हिय ।
बावरा मगन नित रहत आमोद में ॥ ४६ ॥

श्री हनुमत् हृदय

नाथ निज दासन्ह को संकट हरण हेतु ।
प्रकटे पुरारी कपि रूप सुखधाम हैं ॥
कंचन वरण तनु शोभित सुतरुतर ।
देव मुनि सेवत चरण अभिराम हैं ॥
राम नाम रूप लीला धाम में निरत नित ।
गावत सुकवि प्रभु कीरति ललाम हैं ॥
दीनबंधु बावरे की हिय की दशा निहारि ।
करो स्वीकार कोटि कोटिन्ह प्रणाम हैं ॥ ४७ ॥

श्री हनुमत् हृदय

तेरी कल कीरति सुनत हरषत हिय ।
पावन स्वरूप जन लोचनाभिराम है ॥
तेरी प्रभुता की छाँव ताव को हरनहारी ।
विपत्ति विदारक सुखद तव नाम है ॥
बावरा विनीत नित याचना करत नाथ ।
मंगल की मूरति को मम उर धाम है ॥
ऐहो कपिनाथ रघुनाथ के हृदयहार ।
करो स्वीकार कोटि कोटिन्ह प्रणाम है ॥ ४८ ॥

श्री हनुमत् हृदय

देव हौं अधीर हिय पीर की कहानी कही ।
जानत हो नाथ नियती को परिणाम है ॥
ताको नहीं त्रास आस तन की तनिक नाहिं ।
जग जहाँ गति तहाँ नियत विराम है ॥
अन्तर की चाह भरी आह बार बार कहौं ।
प्रभुपद तजि और मोहि कहाँ ठाम है ॥
ईश कर कंजनि को छांव देहु बावरे को ।
करो स्वीकार कोटि कोटिन्ह प्रणाम है ॥ ४९ ॥

दोहा :—

हनुमत् हृदय प्रकाश यह, सद्गुरु कृपा प्रसाद ।
पाठ करे नित ध्यान धरि, मेटे सकल विषाद ॥
मंगल मूरति उर बसे, करे जाप उनचास ।
आधि व्याधि भय दूरि हो, मिटे सकल भवत्रास ॥

इति श्री सद्गुरु कृपा प्रसादेन् विश्वात्मा बावरा विरचित
श्री हनुमत् हृदय संपूर्णः ।
श्री हनुमदार्पणमस्तु
शुभमस्तु :
ॐ श्री राम जय राम जय जय राम ॐ

आरती श्री हनुमान जी की

जय कृपा सिन्धु जन बन्धु अंजनि लाला ।
प्रभु मो पर होउ कृपाला ॥
जय भक्त जनन के पालक घालक खल के ।
जय रामदूत जय पवनपूत निधि बल के ॥
जय महावीर रणधीर देव प्रतिपाला । प्रभु...
जय दीनन के दुःख हर्ता भर्ता जन के ।
जय असुर निकंदन जग वंदन संतन के ॥
हो तुम्हीं सहायक एक वीर बर बाला । प्रभु...
जय प्रेम भक्ति वैराग्य ग्यान के दाता ।
जय राम नाम के रसिक साधुजन त्राता ॥
हे नाथ कृपा की कोर करउ सब काला । प्रभु...
हे नाथ काम मद क्रोध बोध अपनायो ।
सुनि सुयश तिहारी शरण बावरा आयो ॥
अब लेउ मोहि अपनायो तोरि जगजाला ॥ प्रभु...

विश्वात्मा बावरा

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब
छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महामुनि साप दियो तब
चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के सोक निवारो । को०- २।
अंगद के सँग लेन गये सिय
खोज कपीस यह बैन उचारो ।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

जीवत ना बचिहौ हम सों जु
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब ।
लाय सिया- सुधि प्रान उबारो । को०- ३ ॥
रावन त्रास दई सिय को सब
राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाय महा रजनीचर मारो ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

चाहत सीय असोक सों आगि सु
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो । को०- ४ ॥
बान लग्यो उर लछिमन के तब
प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत
तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्रान उबारो । को०- ५ ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

रावन जुद्ध अजान कियो तब
नाग की फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु
बंधन काटि सुत्रास निवारो । को०- ६ ॥
बंधु समेत जबै अहिरावन
लै रघुनाथ पताल सिधारो ।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि
देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही
अहिरावन सैन्य समेत सँहारो । को०- ७ ॥
काज किये बड़ देवन के तुम
बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को
जो तुमसों नहीं जात है टारो ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो ॥ को०- ८ ॥

दो०-

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

॥ इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥